एपिसोड 5 जागृति

पात्र सूचि

टीचर : वयस्क महिला आवाज़

सुमिता : वयस्क महिला आवाज़

रीता : आठ वर्षीय बालिका

रवि : किशोर बालक , रीता का भाई , कक्षा 9

धरती माता : महिला आवाज़

(यह एक स्कूल है अत: रवि और रानी द्वारा किये जाने वाले प्रश्न किन्ही अन्य आवाज़ों में भी हो सकते हैं.डबिंग कलाकारों की अनुपलब्धता को ध्यान में रखते हुए केवल 2 छात्र आवाजें रखी गईं हैं किन्तु निर्माता चाहें तो अधिक छात्र आवाजें इस्तेमाल करने के लिए स्वतंत्र हैं)

कई बच्चों की तेज़ तेज़ बातचीत का मिला जुला शोर उभरता है ! माइक चालू होने की ध्वनि के साथ हेल्लो हेल्लो, माइक टेस्टिंग ,ओके ,ओके की मद्धिम आवाजें गूंज कर गुम हो जाती हैं !

टीचर : गुड मोर्निंग बच्चों ! तुम लोग जानना चाहते होगे कि ऑडिटोरियम में तुम्हे क्यों इकठ्ठा किया गया है ! तो लो , इसकी वजह भी बताये देती हूँ ! सौभाग्य से हमारे बीच इसी स्कूल की एक पूर्व छात्रा कुमारी स्मिता मौजूद हैं ! इन्हें इस वर्ष सस्टेनेबल डेवलपमेंट विषय पर शोध कार्य के लिए ग्रीन ग्लोब अवार्ड से सम्मानित किया गया है !

तालियों की गडगडाहट

टीचर : मेरे ख्याल से सस्टेनेबल डेवलपमेंट के बारे में आप सभी जानते होंगे ! इसका अर्थ है हमारी आज की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उठाये जाने वाले विकास के ऐसे कदम जिनसे भविष्य में अगली पीढ़ी की , उनकी अपनी ज़रूरतें पूरा करने की क्षमता किसी तरह बाधित ना हों !

रीता : आज की ज़रूरतें ...क्या इनमें हम बच्चे भी शामिल हैं ?

टीचर : हाँ ! बिलकुल ! तुम अगर बच्चे हो तो इसका ये अर्थ नहीं कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट के दायरे से बाहर हो ! जब हम भविष्य की बात करते हैं तो

उसमे तुम ही नहीं बल्कि तुम्हारी अगली पीढियां ,तुम्हारे बच्चे और नाती-पोते भी शामिल हैं !

(बच्चे हँस पड़ते हैं किन्तु टीचर बोलना जारी रखती हैं)

और उनके भी नाती-पोते यानी वो सब जो देर-सवेर इस धरती पर जनम लेंगे और अपनी ज़िन्दगी जियेंगे ! (कुछ रुक कर) अ . बच्चो !.ये हैं सुमित्रा !, इनका ज़ोरदार स्वागत कीजिये !

सब ताली बजाते हैं

टीचर : सुमित्रा !, तुम्हारा स्वागत करते हुए बहुत ख़ुशी हो रही है ! क्या तुम अपने जूनियर्स को सस्टेनेबल डेवलपमेंट के बारे में कुछ बताना चाहोगी ?

सुमिता : थैंक यू मेम ! सच कहूँ तो इस स्कूल में जिसकी मैं खुद भी कभी एक छात्रा थी मेरा स्वागत होना मेरे लिए वाकई बहुत बड़े सम्मान की बात है ! इसके साथ ही एक रिश्ता कायम रहने का ज़बर्दस्त अहसास भी हो रहा है ! मैं समझती हूँ ,कि एक भूतपूर्व छात्रा होने के नाते इन नये छात्रों के प्रति मेरी कुछ ज़िम्मेदारी भी बनती है ...क्योंकि मैं इस स्कूल में उनसे भी पहले आ चुकी हूँ लिहाज़ा उन्नति की दौड़ जारी रखने का कोई प्रतीक उनके हाथों में सौपूं ताकि स्कूल का नाम भविष्य में उज्ज्वल होता रहे !

रवि :- जैसे सतत विकास ! क्योंकि हमारी पीढी पर ये ज़िम्मेदारी है कि आने वाली पीढ़ियों की जरूरतों का भी ध्यान रक्खें !

सब हंसते हैं

सुमिता : मेरे ख्याल से तुमने इस बात को ठीक ही समझा है ! तो , कौन मुझसे सवाल पूछना चाहेगा ?

रीता : मैं !.मेरा नाम रीता है ! मेरी आयु 8 वर्ष है ..अ ..मैंने ये शब्द सतत विकास पहले कभी नहीं सुना ! आखिर हमें इसकी जरूरत क्यूँ है ?

सुमिता : रीता ,बेशक तुमने एक महत्वपूर्ण और बहुत बुनियादी सवाल उठाया है ! इसे कुछ यूँ समझो कि अपनी धरती माता से हम लगभग हर चीज़ हासिल करते हैं - करते हैं ना !! कुछ संसाधन ,जैसे साँस लेने को हवा हमें आसानी से मुफ्त ही मिल जाती है लेकिन बाकी के लिए हमें मेहनत करनी होती है ..जैसे खेत में फसल उगाने के लिए हमारे किसान जी तोड़ मेहनत करते हैं ! क्यों बच्चों ,ठीक है ना ?

बच्चे : जी हाँ !!

सुमिता : तो इस तरह जो कुछ भी हम धरती माता से हासिल करते हैं उन्हें संसाधन कहा जाता है ! संसाधन दो प्रकार के होते हैं ! रिन्यूएबल और नॉन-रिन्यूएबल !!

टीचर : बच्चों ! इन नामों से तुम समझ सकते हो कि नॉन-रिन्यूएबल संसाधन वो हैं जो बहुत सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हैं ! अगर ये खत्म हो जाएँ तो फिर इन्हें प्राक्रतिक रूप से दोबारा हासिल नहीं किया जा सकता !

सुमिता : रिन्यूएबल संसाधनों के मामले में स्तिथि थोड़ी बेहतर कही जा सकती है क्यूंकि इनकी भरपाई पर्यावरण द्वारा थोडे समय बाद कर दी जाती है !

रीता : क्या इनके कुछ उदाहरण देंगी प्लीज !

टीचर : जैसे सूर्य की रौशनी ! जैसे पवन ऊर्जा ! फसलों का भी उदाहरण दे सकते है ! सभी पशु प्रजनन करते हैं तो ये भी रिन्यूएबल संसाधनों में शामिल माने जायेंगे ! लेकिन अगर किसी प्रजाति का शिकार कर करके उसे विलुप्त ही कर डाला गया हो या कि उनके ठिकानों को उजाड़ कर उनका खात्मा कर दिया गया हो , तब तो उन्हें रिन्यूएबल की श्रेणी में रखने का सवाल नहीं उठता ! तब तो वो प्रजाति हमेशा हमेशा के लिए नष्ट हो चुकी !

सुमिता : हम जमीन खोद कर खनिज पदार्थ प्राप्त करते हैं ! तेल के कुओं से हम पेट्रोलियम हासिल करते हैं ! लेकिन जरा कल्पना करो क्या होगा अगर युद्ध छिड़ने पर उन तेल कुओं में आग लगा दी जाए ! या कि हम खदानों का सारा ही खनिज खोद कर बाहर निकाल लें ..समझो , कोयला खदानों से सारा का सारा कोयला खोद कर उन्हें खोखला कर डालें ?

बच्चे : हम तो ना तेल उगा सकते हैं , ना कोयला ..ये सब तो नॉन-रिन्यूएबल संसाधन ही हैं ..ये सब के सब खत्म हो जायेंगे ! कुछ भी नहीं बचेगा !

टीचर : तुम लोगों ने बिलकुल सही कहा !!

सुमिता : अगर सभी प्राक्रतिक संसाधन नष्ट हो गये तो हम क्या करेंगे ?

(पल दो पल के लिए सन्नाटा छा जाता है)

रीता (सहमते हुए) :

ख़तम हो जायेंगे हम सब ???

सुमिता : हुम्मम !! चलिए देखते हैं हमारे पास बचने के और क्या रास्ते हैं ! यूँ ही ख़तम होजाना तो भई अपुन को पुसाता नहीं !! (हंसती है)

संगीत

सुमिता : मेरे पास एक छोटा सा नाटक है जिसके जरिये दिखाउंगी धरती माता अगर बोल सकती तो क्या कहती ! ध्यान से सुनिए !!

धरती माता : जब मानव जाति पहली बार अस्तित्व में आई तो मैंने कभी सोचा न था कि सन 2100 आते आते तक उनकी आबादी 10 अरब से आगे पहुंच जायेगी ! मनुष्यों के अलावा अन्य जीवों को गिनती तो मैंने अभी बताई ही नहीं है ! मुझे इनका पेट भरना है , इनका तन ढंकना है , रहने के लिए आसरा देना है ! इन्हें घूमना पसंद है ,जगह जगह आते जाते हैं सो मुझे इसके लिए भी इन्हें संसाधन देना पड़ते हैं ! सभी मनुष्य या देश एक सरीखे नहीं होते !

- कुछ लालची होते हैं और अपनी जरूरत से कहीं ज्यादा झपट लेते हैं (और दो ..मुझे और दो की आवाजें)
- कुछ हैं कि जिन्हें बर्बाद करने में कोई गुरेज़ नहीं ! (बार बार पानी फ्लश किये जाने की आवाजें)
- कुछ अशिक्षित हैं और मेरी सौगातों की कद्र नहीं करते !
- कुछ इतने गरीब हैं कि मेरी सौगातों तक उनके हाथ पहुंच ही नहीं पाते !

(रोने-बिलखने की आवाजें –मैं भूखा हूँ ..मैं सर्दी से कांप रहा हूँ ..मुझे कपड़े चाहियें)

(इन मार्मिक अंशों का नाटकीकरण करना होगा ! यदि ध्वनि प्रभाव उपलब्ध ना हों तो वाचन में नाटकीय असर पैदा किया जा सकता है)

धरती : मानव जाति मुझ पर निरंतर बढ़ता एक ऐसा बोझ है कि जिसे ढो पाना अब मेरे बूते से बाहर हो चला है ! लेकिन मानव जाति बुद्धिमान है ! कुछ ने स्थिति की गम्भीरता को समझ भी लिया है ! लेकिन उन्हें तत्काल क़दम उठाना चाहिए ! मेरा धीरज छूट रहा है . सहने की ताकत जवाब दे चली है .. मुझे सहारा चाहिए ..मुझे सहारा चाहिए !!

(सिसकियों की आवाज़)

बच्चे : धरती माँ कितनी व्याकुल है !! हम उनकी कैसे मदद कर सकते हैं ?

टीचर: यह समस्या धरती के सभी वासियों को मिलकर सुलझानी होगी ! बेशक़ हम सब भी इसमे मदद कर सकते हैं !

सुमिता : यदि स्थिति को सम्हालने की दिशा में बढना है तो जरूरी है ,सबसे पहले हम उन 3 खास मुद्दों को जान लें जिनसे हमें निपटना होगा ! गिनते चलिये ! नम्बर एक-सामाजिक मुद्दे ! दो – आर्थिक मुद्दे और तीसरा मुद्दा है – पर्यावरण !

रवि : यानी आर्थिक विकास , सामाजिक विकास और पर्यावरण की सुरक्षा – ये वो 3 स्तम्भ है जिन पर सहन क्षमता यानि सस्टेनेबिलिटी का दारोमदार है !

टीचर : रवि , तुमने बहुत सही बात कही ! एक बार इस तरह सोचना शुरू करने पर तुम अच्छी तरह जान लोगे कि यदि इन तीनों में से एक स्तम्भ भी कमजोर हुआ तो पूरी व्यवस्था गडबडा जाएगी !

रवि : क्या इन तीनों स्तम्भों के लिए अलग अलग सन्स्थायें हैं या सिर्फ एक ही है ?

सुमिता : अधिकतर राष्ट्रीय और अंतरराष्टीय प्रयास एक समय एक ही खम्भे पर केंद्रित होते हैं , उदाहरण के लिए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण योजना यानि यूनाइटेड नेशन्स एन्वायरोन्मेंट प्रोग्राम (UNEP) और कई देशों की एन्वायरोन्मेंटल प्रोटेक्शन एजेंसीज़ (EPA) पर्यावरण स्तम्भ पर केंद्रित रहतीं हैं !

बच्चे :- ओ,के,

सुमिता :- विश्व व्यापार संगठन, वर्ल्ड ट्रैड ऑर्गनाइज़ेशन (WTO) अधिकतर आर्थिक विकास पर केंद्रित रहता है

बच्चे :- ठीक है !!

सुमिता :- THE ORGANIZATION FOR ECONOMIC CO OPERATION AND डेवलपमेंट (OECD) आर्थिक विकास के साथ साथ मसलों , जैसे शिक्षा न्याय पर भी नज़र रखती है ! संयुक्त राष्ट्र संघ इन तीनों स्तम्भों को सशक्त बनाने में पूरी तरह प्रयत्नशील रहता है !

टीचर :- दुर्भाग्य से हमारे पास अब तक ऐसा एक भी संगठन नहीं है जो वैश्विक या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इन तीनों स्तम्भों पर केंद्रित हो !!

सुमिता :- धीरे धीरे हमें भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहमति हासिल होती जा रही है और संभव है , ऐसा संगठन हमारे यहां भी विकसित हो जाये !

रानी :- अलग अलग देश किस तरह एक साथ हो रहे हैं ?

रवि :- हाँ ,समृद्ध देशों की तो संसाधनों के बारे में अलग ही धारणा है ! उनका मक़सद तो ज़्यादा से ज़्यादा खनिज हासिल करना,उत्पादन बढ़ाना, ज़्यादा से ज़्यादा चीज़ों का उपभोग करना और फिर उन्हें फ़ेंक देना ही होता है ! दूसरी तरफ ग़रीब देश हैं जिनकी सोच अलग है ! अक्सर तो बेहद ग़रीब देशों की उन संसाधनों तक , जिनकी उन्हें सब से ज़्यादा ज़रूरत है , पहुँच ही नहीं होती ! (कुछ विचलित और क्रोधित होकर) मुझे तो यक़ीन नहीं कि भरपूर दौलतमंद देशों और विकास शील देशों के बीच किसी एक समान मुद्दे पर आम सहमति हो पायेगी !

टीचर (चेतावनी के स्वर में) :-

रवि !! इस बात को लेकर इतना परेशान होने की ज़रूरत नहीं है ! ज़रा सुनो तो सही सुमिता क्या बता रही है – अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोग बढ़ रहा है ..और तुम्हारे ही देखते देखते आने वाले दौर में वो काफी हद तक बढ़ेगा ! आखिर सस्टेनेबिलिटी की खातिर ऐसा तो होना ही है !!

सुमिता :- सन १९७२ में मानव पर्यावरण के मुद्दे पर स्टॉकहोम में आयोजित पहले संयुक्त राष्ट्र अधिवेशन में ,दो राष्ट्र प्रमुख शामिल हुए - स्वीडन के ओलाफ पाम और भारत की श्रीमती इंदिरा गाँधी !! एक तरह से ये वो पहली बैठक थी जिसमें विश्व स्तर पर बढ़ती पर्यावरण की गम्भीर दशा पर गहराई से विचार मंथन किया गया !!

(बच्चे ताली बजाते हैं)

टीचर :- इस कॉन्फ्रेंस में विश्व स्तर की साझी यानि पर्यावरण की अंतरराष्ट्रीय दशा को बड़े पुरज़ोर तरीके से उठाया गया ! इसने लोगों को विकास और पर्यावरण के बीच रिश्तों और आपसी तालमेल की ज़रूरत के बारे में गम्भीरता से सोचने पर मजबूर किया ! इसके बाद पूरी दुनिया इस समस्या की गम्भीरता के बारे में सचेत हुई ! द यूनाइटेड नेशन्स एन्वायरोन्मेंट प्रोग्राम (UNEP) क़ायम किया गया ! क़रीब बीस बरस बाद सौ से अधिक देशों के प्रमुख और 178 राष्ट्रों के शासकीय प्रतिनिधि संयुक्त राष्ट्र संघ

के विकास और पर्यावरण के मुद्दे पर आयोजित रियो दे जेनेरियो अधिवेशन में शामिल हुए ! यही वो मशहूर रियो दे जेनेरियो 1992 सम्मेलन था !

रवि :- चलो -लोगों ने बजाए सिर्फ अपने अपने देशों के बारे में सोचने के, धरती के बारे में भी सोचना तो शुरू किया ! और समझदारी का तकाज़ा भी यही है ! क्या हम हवाओं को या समन्दरों को अलग अलग हिस्सों में बाँध सकते हैं ? नहीं ना ? प्रदूषण तो राष्ट्रों की सीमाओं को लांघता हुआ अपना ज़हर फैलाता चला जायेगा !

टीचर :- बिलकुल सही ! हाँ तो इस तरह विकास के कुछ और अधिक सस्टेनेबल पैटर्न पर एक ठोस और कारगर रणनीति बनाने और उसे अमली जामा पहनाने यानि कार्य योजना तैयार करने की दिशा में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुई एक ज़बरदस्त पहल थी ! इसी सम्मेलन में बायो डायवर्सिटी कन्वेंशन का प्रस्ताव भी रखा गया !

सुमिता :- जी हाँ ! और हमारे देश ने भी उस पर हस्ताक्षर किये थे ! बुनियादी तौर पर भारत ने जैविक विविधता के सम्वर्धन पर अपनी सहमती जताई , साथ ही उसके सस्टेनेबल उपयोग करने और आनुवांशिक या जेनेटिक संसाधनों से मिलने वाले फायदे और जानकारी भी सही और न्यायोचित तरीके से साझा करने के प्रति अपनी वचनबद्धता दर्शाई !

रवि :- सही बात है ! अगर प्रजातियां लुप्त होने लगीं तो प्राकृतिक संसाधनों पर भी खतरा मंडराने लगेगा ! सस्टेनेबल विकास प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है ! वनस्पति और जीव प्रजातियों से मिलने वाली आनुवांशिक जानकारी ही तो वो बुनियाद है जिस पर निर्भर है खेती , फार्मासेयूएटीकल और बायो टेक्नोलॉजी आधारित उद्योग !!

सुमिता:- और कोई एक प्रजाति हमें किस क़दर फायदा पहुंचाने की क्षमता रखती इस बात का अक्सर हमें पता ही नहीं होता क्योंकि हमने उस प्रजाति के बारे में विस्तार से अध्ययन नहीं किया होता ... और अगर वो लुप्त हो जाये तो उसका लाभकारी उपयोग कर पाने की हमारी आशा भी नष्ट हो जाएगी !

टीचर :- तो यह पहला मौक़ा था जब दुनिया को अहसास हुआ कि जैविक संरक्षण और जैविक विविधता का सम्वर्धन मानव जाति की एक साझी समस्या है - और विकास प्रक्रिया का आंतरिक हिस्सा है !

(करतल ध्वनि)

संगीत

रीता :- माम ! तो क्या अगले क़दम उठाने में क्या फिर बीस बरस लग गए ?

टीचर(हंसकर) :-

नहीं नहीं ! हालात की गम्भीरता कितने ही अंतरराष्ट्रीय समझौतों से ज़ाहिर है - मसलन

* 1978 - ग्रेट लेक वाटर क्वालिटि एग्रीमेंट (झंकार ध्वनि)

*1979 - लॉन्गरेंज ट्रांसबाउंडरी एयरपॉल्यूशन परआयोजित जेनेवा कन्वेंशन(झंकार ध्वनि)

*1985 -हेलसिंकी एग्रीमेंट (झंकार ध्वनि)

*1988 -ओज़ोन परत का क्षय करने वाले पदार्थों पर केंद्रित -मोंट्रियल प्रोटोकॉल , और

*1989 - ट्रांसबाउंडरी मूवमेंट ऑफ़ हेज़ार्डस वेस्टस पर बासेल कन्वेंशन -(झंकार ध्वनि)

सुमिता :- बहरहाल सन 1987 में जाकर ही सस्टेनेबल डेवलपमेंट यानि सन्तुलित विकास हमारे शब्दज्ञान में दाखिल हो सका !

रवि :- याने इस जाने कितनी पुरानी धारणा(concept) को कुछ ही अरसे पहले ये नाम मिला है !

सुमिता :- हाँ ! यू.एन.जनरल असेम्बली ने पर्यावरण और विकास के मुद्दे पर एक विश्व आयोग गठित किया ! नॉर्वेजिया के प्र□□□ मंत्री ग्रो □□□□ ब्रंटलैंड (brundtland) □□□□अध्यक्ष थे□इसलिए रिपोर्ट को उन्ही का □□□ दिया □□□ !

टीचर :- ब्रंटलैंड रिपोर्ट ने□□□□□□ की कि □□ वक्त □ □□□ □□□□ विकास □□ अर्थ तन्त्र (economy) □□ विवाह सूत्र में □□ □□□□ चाहिए ! □□ रिपोर्ट में सन्तुलित विकास (sustainable development) संज्ञा □□ प्रयोग किया □□□ !

(बच्चों की □□□□ भरी मिली जुली आवाज़ों □□ □□□)

सुमिता :- □□□□ तुम्हे □□□□□□□ □□□□□ □□ रही □□□□ कि □□□ पर्यावरण □□ विकास की शादी □□□□□□ □□□□ □□ !

बच्चे :- □□□!

टीचर :- □□□□ - पदार्थों □□ □□□□ ,उनकी शुद्धि.वस्तुओं की तैयारी □□□□□□□ ,□□□□□ □□ उन्हें ठिकाने □□□□□ - □□सारी गतिविधियां पर्यावरण □□ प्रभावित □□□□□हैं ! इन्ही □□ □□□□□□ □□□□ □□ गन्दगी □□□ □□□□ □□! □□ □□

□□□ आर्थिक विकास, वस्तुओं □□□□□□□ □□ पर्यावरण □□□□□ बिल्कुल □□□□ सम्बन्ध है□!

बच्चे :- □□ ..! □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ ही नहीं !!

सुमिता :- पर्यावरण की चिंता किये □□□ □□□□□□□ आर्थिक विकास पर्यावरण □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□!

रवि :- □□□□सही □□□ ! स्कूल □□रास्ते में □□□ □□ फैक्टरी □□□□□ □□जिसकी चिमनी ढेरों □□□□ □□□ □□□□ में □□□□□ □□□□ □□! □□□□कितने ही पड़ौसियों □□ □□□ की तकलीफ □□ □□ □□! मेरी □□□खिड़कियां बन्द □□□□ हैं □□ - □□□□ पर्यावरण में □□□□□प्रदूषण □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□ हैं !

टीचर :- □□ □□□□□ □□मुताबिक़ पृथ्वी की 60 % पारितांत्रिक □□□□□(इकोसिस्टम सर्विसेज) पिछले 50 वर्षों में गिरावट □□ शिकार हुई हैं ! □□ 2040 □□ प्राकृतिक संसाधनों □□□□□□□ में पृथ्वी की जैविक क्षमता □□ 170 % अधिक □□ बढोत्तरी □□□□की सम्भावना □□! □□ □□□ □□ हिसाब □□□□□□ , पृथ्वी की □□□ क्षमता □□लिए □□□□□ क्या □□□□□□□□□ □□!

सुमिता :- □□ सारी बातों □□□□□□में □□□□□ ! □□ □□□□ □□□ □□ □□ ज़्यादा जानकारी इकट्ठी □□□□ ! सन्तुलित □□ □□□□□□□ विकास □□लिए विश्व स्तर □□ □□□□□□□□□□□□ क़दमों □□□□□में क्या जानकारी मिली इ□ □□ □□ □□□ □□ □□ प्रेजेंटेशन जमा □□ □□□□□□ !

बच्चे ((एक धुन में) :-

थैंक □□!

----------x----------

(रवि □□ रीता □□□ □□ □□□□□ -- व्यस्त ट्रैफिक - आ□□ □□□□ बसों □□ □□□-ब्रेक्स की कर्कश आवाज़ें आदि)

रीता :- रवि □□□ ! □□□□ □□□□हैं , अमेरिका □□ □□□□ □□□□ विकसित हैं ! □□□ □□□□ □□ - □□□□□□□ □□□ □□□□□ हैं ! □□ □□□□विकसित नहीं हैं ...□□□□ □□□□ □□□□हैं - □□ लोगों □□□ □□□□ नहीं □□! □□□ □□□□□ कारें नहीं हैं ! □□□□ □□□ ज़्यादा चीज़ों □□ इस्तेमाल □□□□हैं , □□□□ ?

रवि :- □□□□□□ □□□□ □□□ नहीं □□! तुम्हारा □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ विश्व स्तर □□ □□□□□ की मात्रा □□ □□□□□ □□तरीक़ों से] ताल्लुक़ □□□□ □□!

रीता :- तुम्हारा □□□□ पूरी दुनिया ?

रवि :- □□! □□ □□□ज़्यादा □□□ होंगे, □□□□□□□□ □□ ज़्यादा □□□□ ! □□ 2050 □□ दुनिया की आबादी □□□□ 90 □□□ (9 बिलियन) हो □□□□□ ! □□ व्यक्ति उपभोक्ता □□! □□□□□□ □□ इस्तेमाल □□□□□ ज़्यादा लेकिन □□ व्यक्ति सं□□□□ □□ □□□ हिस्सा तो इस्तेमाल □□□□ ही !

रीता :- □□ ! □□ □□ □□□□□ की □□□ मात्रा □□□□ ज़्यादा □□ □□□□□ !

रवि :- समस्या फिर दुनिया में संमृद्धि □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □ □□□□□ □□! □□ 2030 □□ दुनिया में मध्यम वर्ग □□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ की उम्मीद □□! ज़ाहिर □□□□ □□□ □□ □□□□ इच्छाएं □□ □□□□□□□□□□□ चाहेंगे ! □□ □□□□ □□ □□□□ वर्ग □□ उपभोक्तावादी □□ ही , □□ □□ □□ हरगिज़ रु□□□□□□□ नहीं ! उनकी □□□ □□ □□ ज़्यादा □□□□ ! □□□□□□ □□, □□□□ □□□ □□□□□+ विश्व स्तर □□ □□ 1990 □□ 2002 □□□□□ सामान्य □□ में क़रीब 21 % की बढोत्तरी ही □□ □□ !

रीता(रुआंसे लहजे में):-

□□□□□ ज़्यादा □□□□ - □□□□ ही ज़्यादा खर्च □□□□की □□□□ - □□ □रीदे □□□ - खरीदे □□□ ! आखिर □□सिलसिला कैसे□रुकेगा ? □□□□ ख्याल □□ उम्र में □□□लोगों □□ □□□ □□□□ चाहिए ! □□ अंधाधुन्द □□□□ मांगों □□ उत्पादन □□ □□□□□□□ □□□□ □□...□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□प्राकृतिक सं□□□□ खत्म □□ जायेंगे ..□□ □□ क्या □□□□ ? □□□ □□ नहीं □□□□ किसी □□□□□ !!

रवि :- □□□.□□□□ □□□□□ □□ □□ ! दुनिया □□ □□दुखड़ों □□ □□□ सिर्फ तुम्हारे ही नन्हे कन्धों पर नहीं □□!. हैं □□□□□ □□□□□□ □□□□देशों □□ मिलकर □□ □□□□ □□□□ -□□ □□□□लिए अंतरराष्ट्रीय सहयं□□ □□ ज़रूरी हो□□ ! आखिर □□□□□□□□ □□□□□ सिर्फ एक ही □□ □□□□ □□! □□□यक़ीन □□, □□□□□□□□ □□□□ ख्याल □□! □□□ ,□□ □□ □□ जानकारी इकट्ठी □□□□ हैं सम्हल □□ -इलेक्टोनिक स्टोर □□□□ □□□ □□□□□ □□□□निकलना उसकी □□□□ □□ □□□ □□□□□ भरी □□कि □□□□□ रास्ते में ही □□□ □□ □□ दिया !!

□□□□

*****

रवि :- रीता ! □ □ , □□□□□□ □□□ ! मैं □□□ □□ दुनिया □□सन्तुलित विकास की जानकारी इकट्ठी □□□□ □□!

की- बोर्ड □□ उँगलियाँ □□□□कि आवाज़ें

रवि :- □□□□□ !!

रीता (खुश होकर):-

□□ ...तुम्हे □□ □□ हिट्स मिल □□ ! □□□ , जल्दी जल्दी पढ़□ ! □□□ □□□□□□□ ! सितम्बर 2000 की मिलेनियम समिट □□□□□□में हुई 21 □□□ सदी हमारी □□□ □□लिए अच्छा वक़्त □□! □□□ □□□□□ !!

रवि :- □□□□□□□ □□कि □□ □□ अंतरराष्टीय लक्ष्य निर्धारित किये □□ □□, □□ □□□□ □□लिए लक्ष्य पूर्ति की □□□□ □□ तारीख निश्चित □□ दी □□ □□ !

रीता :- अच्छा ! □□ क्या □□□□ लक्ष्य ?

रवि :-

* □□□ □□□□ □□ □□□□ ग़रीबी □□ भुखमरी □□ खात्मा (□□□□ ध्वनि)
* विश्व स्तर □□ प्राथमिक शिक्षा (□□□□ ध्वनि)
* लिंग की □□□□□□ □□ नारी सशक्तिकरण (□□□□ ध्वनि)
* शिशु म्रत्यु द□ □□□□□ (□□□□ ध्वनि)
* □□□□स्वास्थ्य को □□□□ □□□□□ (□□□□ ध्वनि)
* □□ □□ □□ / एड्स ,मलेरिया □□ अन्य बीमारियों के विरुद्ध मोर्चा (□□□□ ध्वनि)
* पर्यावरण □□ सन्तुलन (सस्टेनेबिलिटी) सुनिश्चित □□□□ (□□□□ ध्वनि)
* विकास □□लिए वैश्विक भागीदारी विकसित □□□□ (□□□□ ध्वनि)

माँ :- रवि रीता ! □□ □□□ कम्प्यूटर प□ क्या □□ □□□□□ ? □□□□ □□□□नहीं □□□□□ ?

रवि और रीता :-

नहीं ! □□□ हमें सन्तुलित विकास □□ □□ इंट्रेसटिंग काम□ मिला □□! □□□ □□□ हमें □□□ □□□ कि □□ सदी □□शुरू □□□□ 2000 में दुनिया □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ किया !

माँ :- □□□□ □□□□ □□□ मिलेनियम □□□पमेंट गोल्स □□□□□□में □□□ □□ □□□□□ ! □□□ कि □□ □□□ □□ ,□□□2015 □□ □□□ □□□□□ □□ ! 25 सितम्बर 2015 □□ □□ देशों □□□□□ लक्ष्य सन्तुलित विकास □□□□ □□ एजेंडे □□

□□□ □□रूप में □□ किये ! □□ □□□ लक्ष्य पूर्ति की □□□□ □□□□□ □□ लक्ष्य □□□□15 वर्षों में हासिल □□ लिया □□□□ □□! □□ □□ □□□ □□लिए सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स 2030 □□□ □□□ !

रवि :- □□ क्या □□ 15 बरसों में विश्व स□□□□ □□□ हासिल नहीं □□ □□□□ ? दूसरी □□□ □□□□ कि ज़रूरत क्यों □□□ ?

माँ (तुरन्त) :-

नहीं □□□! □□□ नहीं □□! □□□ □□□ □□ □□ज़बरदस्त □□□□□□□ □□□ ! □□□ ग़रीबी में □□लोगों की □□□□ में □□□ □□ ! शिशु मृत्यु द□ में गिरावट □□ ! □□□की अवधि में □□□□□ □□□ ! स्वच्छ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □ज़रूरी स□□ - □□□□ □□□□□□ अधिक लोगों की □□□ बढ़ी !

रानी (हैरानी से) :-

□□ □□□□अच्छे □□□ □□ □□ फिर 2030 वाली □□ □□ □□□□ की ज़रूरत क्यों प□□ ?

माँ (आश्वस्त भाव से):-

□□□□□ कि दुनिया □□□□□ देशों में प्रगति स□□□□□ □□स्तर □□ नहीं छू □□□□ , □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ ज़बरदस्त □□□ □□□□ □□!

रवि :- □□□लेकिन □□ ही □□ □□□□□ , ग़रीबी □□□□ज़्यादा □□□□□ इलाक़ों में □□□ □□□□ □□ -हालाँकि ग़रीबी शहरी इलाक़ों में □□ □□□□ □□ रही □□! □□□उसकी चर्चा □□ □□ लेकिन □□ □□ रही □□! स्कूल □□रास्ते में कच्ची बस्तियां , झुग्गी-झोपड़ियां □□□ □□□□हैं □□ □□□□कितने □□□ □□□ □□□□प्लेटफॉर्म □□ □□ पुलों □□□□□□□□□□ □□□□हैं !

रानी ::- बिलकुल !! □□ □□□□□ सिर्फ बेघ□ ही नहीं -□□□ ग़रीब □□ □□□□हैं ! □□□□□□ □□□□□□लिए इन्हें अक्सर □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□!

माँ :- □□□ बिटिया □□ □□□ छोटी □□ - नहीं □□□ □□□□ कि ग़रीबी सिर्फ □□□□□ □□ साधनों कि □□□ ही नहीं □□!

□□□□अर्थ बुनियादी सेवा□□□□, □□□शिक्षा , □□वंचित □□ □□□□ □□ □□! □□□□□□□ हैं □□,□□□□□ □□□□□ □□ निर्णय लेने□कि प्रक्रिया से □□□ रक्खा □□□□ !

रवि :- □□ चार्ट □□□□□ □□ मैं सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स 2030 स्कूल में □□□□□□□□ □□! □□□□ ,□□□ □□□ □□□ □□, सस्टेने□□ डेवलपमेंट गोल्स (SDGS) □□ जन्म □□ 2012 □□संयुक्त राष्ट्र द्वारा सस्टेनेबल डेवलपमेंट □□ □□□□□□ रियो □□□□□□ सम्मेलन में □□□ □□ !

सुमिता दीदी ने हमें रियो में हुए पहली अर्थ समिट में हुए ...अजेंडा यहीं से ! मैं इसे शुरुआत करूँ ! !

रीता :- मैं यह करूँगी ! ये , ये गोल्स लिख दो !

रवि :- ये 17 गोल्स हैं ! ये मैं इन्हें अच्छी तरह से ...

17 सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स

* **गोल नम्वर 1 -** पूरी दुनिया से गरीबी की सभी रूपों में समाप्ति
* **गोल नम्बर 2 -** भूख की समाप्ति,खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देना , सतत टिकाऊ कृषि को बढ़ावा !
* **गोल नम्बर 3 -** सभी लोगों में स्वास्थ्य सुरक्षा को स्वस्थ जीवन को बढ़ावा
* **गोल नम्बर 4 –** समावेशी ,न्यायसंगत को गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी को उपलब्ध ...!
* **गोल नम्बर 5 -** लैंगिक समानता प्राप्त करना महिलाओं को कन्याओं को सशक्त बनाना !
* **गोल नम्बर 6 -** सभी के लिए स्वच्छता को जल की उपलब्धता और ही सतत प्रबन्धन की सुनिश्चितता !
* **गोल नम्बर 7-** सस्ती,स्वच्छ ,टिकाऊ को आधुनिक ऊर्जा तक सुनिश्चित ...!
* **गोल नम्बर 8 -** सभी के लिए निरन्तर, समावेशी को सतत आर्थिक विकास,पूर्ण उत्पादक रोजगार को बढ़ावा !
* **गोल नम्बर 9 -** लचीला बुनियादी ढांचा को सतत औद्योगीकरण को बढ़ावा !
* **गोल नम्बर 10 -** देशों के भीतर और देशों की असमानता को कम करना !
* **गोल नम्बर 11 -** सुरक्षित, समावेशी, टिकाऊ शहरों को बस्तियों का निर्माण !
* **गोल नम्बर 12 -** स्थायी सतत उत्पादन पैटर्न को सुनिश्चित करना!
* **गोल नम्बर 13 -** जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाही करना !
* **गोल नम्बर 14 -** स्थायी सतत विकास के लिए महासागरों, समुद्र को समुद्री संसाधनों का संरक्षण को सन्तुलित करना !

* **गोल नम्बर 15** - □□□, सन्तुलित □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□स्थानीय,पारिस्थितिकीय प्रणालियों ,सुरक्षित वनों ,भूमि □□क्षरण □□ □□ विविधता वे□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□प्रयास □□□□ !

* **गोल नम्बर 16** - □□□ विकास □□लिए शांतिपूर्ण 3□□ □□□□□□ समितियओं व□□ □□□□□ □□□□□□□□ ही □□□ स्तरों पर उन्हें प्रभावी □□ □□□□□□ □□□□□ ताकि □□□ □□लिए न्याय सुनिश्चित □□ □□□ !

* **गोल नम्बर 17** - □□□ विकास □□लिए वैश्विक भागीदारी □□ पुनर्जीवित व□□□□□□ □□□□□ कार्यान्वित क□□□□□□□साधनों □□ □□□□ □□□□□ !

or

1. पूरे विश्व से गरीबी के सभी रूपों की समाप्ति।

- 2. भूख की समाप्ति, खाद्य सुरक्षा □□ □□□□ □□□□ □□ टिकाऊ कृषि व□□ □□□□□
- 3. सभी आयु के लोगों में स्वास्थ्य सुरक्षा और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा।
- 4. समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही □□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□
- 5. लैंगिक समानता प्राप्त करने के साथ ही महिलाओं और लड़कियों को सशक्त □□□□□
- 6. सभी के लिए स्वच्छता और पानी के सतत प्रबंधन की उपलब्धता सुनिश्चित □□□□□
- 7. सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करना।
- 8. सभी के लिए निरंतर स□□□□□ और सतत आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक □□□□□, और बेहतर कार्य को बढ़ावा देन□
- 9. लचीले बुनियादी ढांचे, समावेशी और सतत औद्योगीकरण को बढ़ावा।
- 10. देशों के बीच और भीतर असमानता को कम करना।

- 11. सुरक्षित, लचीले और टिकाऊ शहर और मानव बस्तियों का निर्माण।
- 12. स्थायी खपत और उत्पादन पैटर्न को सुनिश्चित करना।
- 13. जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई □□□□
- 14. स्थायी सतत विकास के लिए महासागरों, समुद्र और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और उपयोग।
- 15. सतत उपयोग को बढ़ावा देने वाले स्थलीय पारिस्थितिकीय प्रणालियों, सुरक्षित जंगलों, भूमि क्षरण और जैव विविधता के बढ़ते नुकसान को रोकने का प्रयास करना।
- 16. सतत विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी समितियों को बढ़ावा देने के साथ ही सभी स्तरों पर इन्हें प्रभावी, जवाबदेह बनना ताकि सभी के लिए न्याय सुनिश्चित हो सके।
- 17. सतत विकास के लिए वैश्विक भागीदारी को पुनर्जीवित करने के अतिरिक्त कार्यान्वयन के साधनों को मजबूत बनाना

(इन्हें रवि,रीता □□ □□□ □□ □□□ में □□ □□□ □□लिहाज़ □□□□ □□□□हैं)

रवि :- मैंने □□□ □□□ □□□□ किया कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स 2030 में शून्य ग़रीबी शून्य भुखमरी ,□□□□ स्वास्थ्य ,शिक्षा में गुणवत्ता □□□□□ लैंगिक □□□□□□ □□ □□ मुद्दे □□ □□□ दिया □□□ □□ !

माँ :- □□□□ ही चाहिए !! विश्व स्तर □□ 9 में □□1 □□□□ □□□□□□ □□ शिकार □□ , □□ लोगों की □□□ भारी □□□□

विकासशील □□□□में □□.□□ □□ विशाल बहुसंख्या □□लिए □□ □□ अच्छी □□□ □□ ! □□□□□ की □□□ □□ 5 □□□ □□□□ □□□□□□□बच्चों की क़रीब □□□ □□□□3.□ मिलियन संख्या □□ □□□ □□□ □□ शिकार □□ □□□□ □□! □□□ □□□□ □□□ □□ □□ लक्ष्यों को हासिल करलें □□ □□□□□ कितने ज़बरदस्त तरीके □□□□□ जायेंगे !!

रीता (उत्तेजित स्वर में):-

□□, इनमें □□□□ □□ □□ शामिल □□- □□□ □□□□ ! स्वच्छता ! सस्ती ऊर्जा ! उन्मुक्त - प्रदूषण मुक्त □□□□ □□ स्वच्छ प्रदूषण हीन □□□□ !!

रवि :- □□□ ही बढ़िया □□□ □□ आर्थिक उन्नति , □□ उपलब्धियां ,□□□ बराबरी □□ □□□□ ,□□□□□□ □□□ , □□□□□ □□□□□□□में जवाबदेही , क्रियात्मक □□□□□□□ □□ लक्ष्य हासिल □□□□ □□लिए भागीदारी ! □□□□□□ □□□ □□कि □□□□ □□□ □□□ ध्यान सन्तुलित उत्पादन □□ संयमित □□□□□ □□ केंद्रित रहा □□! □□ □□□ख्याल □□□□□ □□□□ □□ यही □□!

रीता :- लेकिन □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□?

माँ :- विज्ञान □□ सही दिशा में □□□□□ □□ प्रभावशील तरीक़ा □□! □□ □□□ □□ प्रभावित □□□□□□□□ □□ मुद्दे सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स में शामिल हैं ! □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ प्रयास □□□□□□□हैं ।□□□□ लक्ष्य □□- □□□□ जाति □□लिए □□ सन्तुलित,सुरक्षित ,चिरस्थाई □□ अधिक समृद्ध दुनिया सुनिश्चित □□□□ !

रवि :- मैं □□□□.सेक्रेटरी-□□□□ □□□ की-□□ की □□ महत्वाकान्ख्श' लक्ष्य □□ □□□□में कही □□□ □□□□□ □□□□□ (रेडियो उद्घोषक सरीखे गम्भीर □□□□ में) 17 सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (SDGs) □□□□ जाति की खातिर □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ ही □□□ □□विश्व के□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ सम्पन्न □□ □□□□□□ अनुबन्ध □□ □□! पृथ्वी □□ □□ □□ □□□□वाली समस्त □□□□ जाति □□हित में निर्धारित □□ □□□ अनिवार्य कार्य सूचि □□□□ □□□ ही □□□□□ सुनिश्चित □□□□□□□□ दस्तावेज़ □□ □□!

माँ :- □□□ख्याल □□महात्मा □□□□ □□□□□□□ □□□□□की □□□ □□□□□□! □□□ □□, उन्होंने □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ ,□□□□ □□□□□ □□ काफी क्षमता □□, □□□ की ज़रूरत पूरी □□ □□□□ □□- लेकिन □□□ □□ □□□□ नहीं !!

रीता :- लेकिन मैं ज़रूरत □□ □□□□ □□□□□ फ़र्क़ □□□□करूँ ? मैंतो ढेरों □□ज़ें □□□□□ □□!

माँ (हंसती हैं) :-

फ़र्क़ □□□□ □□□ □□□□ □□ ज़रूरत □□□□□□□हैं कि इं□□□ □□□□□□□□ नहीं र□ □□□□ ! क्या □□ □□□ ज़रूरतों □□□□□ □□□ □□□□ □□ ?

रीता :- हम्म्म .!..□□ नहीं □□□□ ? □□□ !!. □□□ , □□□□ □□ □□□□ !!!

माँ :- किसी □□□ की इच्छा □□ अर्थ है□- हालाँकि □□□हासिल किये □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□फिर □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□ नहीं !(□□□ □□□□□□ में)-- □□□...?

रवि और रीता (हंसते हुए) :-

□□ □□□ □□ □□□!.बेहिसाब इच्छाओं □□□□□ हैं – हविस !- □□□□ ! □□ हविस □□ □□□□ ही सन्तुलित विकास □□□श्मन □□!!

माँ :- □□! □□ □□ लोगों □□बेहिसाब □□□□ □□ किन्ही देशों में प्रचलित □□□ किफायती □□□□ शैली □□निरन्तर □□□□□□□□□ □□दुनिया □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ दिया □□! □□ □□शिक्षित कर □□□हैं स्कूली बच्चों को -नागरिकों □□ □□□□□की हमारी □□□□ पीढी □□ ! □□□ □□, □□□ □□ □□□ □□ नहीं □□ □□!!

रवि और रीता :-

नहीं □□! □में □□□ यक़ीन □□– 2030 □□ सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स ज़रूर □□□□□ लेंगे ! □□□□□□ की □□ □□ □□□ □□□□□ ही नहीं !!

----------x----------